प्रकाशनार्थ

20 नवम्बर, पटना। महिलाएँ सौंदर्यकर्मी या सिलाई मशीन पर काम करने जैसे पारंपरिक, रूढ़िबद्ध और लैंगिक मानकों से तय भूमिकाओं से आगे बढ़ें। उन्हें कंप्यूटर ऑपरेटर जैसे आधुनिक प्रकार के रोजगारों की ओर भी आकांक्षी होना चाहिए। जिन आकांक्षाओं के लिए हम महिलाओं को प्रोत्साहित करते हैं, उन्हें साकार करने में हमने सफलता नहीं पाई है। यह दुर्भाग्य की बात है| सरकार इस समस्या के समाधान के लिए लगातार प्रयासरत है, लेकिन कौशल उपलब्ध कराने के मामले में बड़ी खाई होने के कारण हम महिलाओं के लिए पर्याप्त रोजगार सृजित नहीं कर सके हैं। यह विचार आज "हाशिये पर पड़े समूहों के लिए कौशल और आकांक्षा के अंतर को पाटना : विकास की राह" विषयक पैनल चर्चा में महिला एवं बाल विकास निगम की प्रबंध-निदेशक श्रीमती बंधना प्रेयाशी ने व्यक्त किए। यह कार्यक्रम एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में आद्री की सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने यूनाइटेड किंगडम की यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग और आद्री द्वारा किए गए संयुक्त शोध अध्ययन के निष्कर्ष प्रस्तुत किए। यह अध्ययन बिहार में हाशिये पर पड़े समुदायों को नौक्रिओं के योग्य बनाने के लिए कौशल अंतर को कैसे पाटा जाए के विषय पर केन्द्रित था। उन्होंने कहा कि लोगों की आकांक्षाएँ, लैंगिकता (जेंडर) और जाति जैसे मापदंड निर्णायक रूप से यह प्रभावित करते हैं कि वे किस प्रकार का काम चुनना चाहते हैं। केवल वेतन दरें ही राज्य के श्रम बाज़ार को निर्धारित नहीं करतीं | वर्दी-धारी और सरकारी नौकरियाँ आज भी बिहारिओं की पहली पसंद बनी हुई हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग की शोधकर्ता प्रोफेसर कम्भम्पति ने इसके बाद बताया कि किस तरह लोगों की आकांक्षाओं का प्रभाव उनके नौकरिओं को चुनने में असर करता है|

उन्होंने बताया कि उनके आद्री के साथ मिलकर किए गए शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि आप किसी चीज़ की आकांक्षा तभी कर सकते हैं जब आपको यह पता हो कि आदर्श स्थिति क्या है और वहाँ तक पहुँचने के रास्ते कौन-कौन से हैं।

पैनल चर्चा में नीति आयोग, बिहार के प्रमुख श्री प्रेम प्रकाश तथा डॉ. सुनीता लाल और डॉ. उषासी गुप्ता ने भी भाग लिया। चर्चा में बड़ी संख्या में शिक्षाविदों, नवोदित शोधार्थियों, नीतिनिर्माताओं एवं सिविल सोसाइटी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

(अभिषेक प्रसाद)